+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

TODAY'S ANALYSIS

(आज का विश्लेषण)

(29 September 2023)

Sources:

The Hindu, The Indian Express, The Economics Times & PIB

Important News:

- सदाबहार क्रांति: 'भुखमरी' के इतिहास बनाने की प्रक्रिया
- सड़क एवं परिवहन मंत्रालय की राजमार्गों के निर्माण कार्यों एवं परिवहन क्षेत्र को पर्यावरण अनुकूल बनाने की योजना

सदाबहार क्रांति: 'भुखमरी' के इतिहास बनाने की प्रक्रिया

सतत एवं स्थायी खाद्य सुरक्षा की तलाश:

- देश में व्याप्त कृषि संकट किसानों और खेती की समस्याओं को उसी गंभीरता से संबोधित करने की आवश्यकता को रेखांकित करता है जो हमने 1960 के दशक की शुरुआत में दिखाई थी। **अधिकांश अनुमानों के अनुसार, खेती अब लाभकारी नहीं रही और 40 प्रतिशत से अधिक किसान विकल्प होने पर इसे छोड़ना चाहेंगे।**
- **खेती हमारी लगभग दो-तिहाई आबादी के लिए जीवन जीने का एक तरीका और मुख्य आजीविका दोनों** है।
- यह स्पष्ट है कि **यदि कृषि में गतिरोध या समस्या बनी रही तो हम अपनी प्रति व्यक्ति आय या मानव विकास संकेतकों में सुधार करने में प्रगति नहीं कर सकते।**

'हरित क्रांति':

- 'हरित क्रांति' शब्द उत्पादकता वृद्धि की प्रक्रिया के लिए गढ़ा गया था। **1960 और 1970 के दशक में हरित क्रांति गेहूं, चावल, मक्का और अन्य फसलों के नए आनुवंशिक उपभेदों के विकास और प्रसार पर आधारित थी,** जो पानी, सूरज की रोशनी और पौधों के पोषक तत्वों का प्रभावी ढंग से उपयोग करने और उन्हें

अनाज में बदलने की क्षमता पर आधारित थे। यह **क्रांति उत्तर पश्चिम भारत में सुनिश्चित सिंचाई वाले क्षेत्रों तक ही सीमित थी।**

- हालांकि, **यहाँ भी, प्रतिकूल पारिस्थितिक और आर्थिक कारकों के कारण खेती अलाभकारी होती जा रही है, जिससे किसानों की ऋणग्रस्तता बढ़ रही** है। **अब चुनौती अपने हृदय क्षेत्र (उत्तर पश्चिम भारत) में हरित क्रांति की थकान से लड़ने और उसे दूर करने की है।**

शुष्कभूमि-केंद्रित समाधान:

- हमारी **खेती मानसून और बाजार दोनों के साथ एक जुआ है।** सिंचाई में सार्वजनिक निवेश गिर रहा है, लेकिन उम्मीद है कि भारत निर्माण कार्यक्रम से इसे उलटा किया जा सकता है।

- **हमें शुष्क खेती वाले क्षेत्रों में उत्पादकता में सुधार करने की आवश्यकता है, जहां दालें, तिलहन और अन्य उच्च मूल्य वाली फसलें उगाई जा सकती हैं, जिनमें कम पानी की आवश्यकता होती** है, लेकिन जिनमें से कई का हम आयात करना जारी रखते हैं।
- इन **क्षेत्रों में छोटे किसानों के लिए बीटी कपास जैसी महंगी प्रौद्योगिकियों को अपनाना बहुत जोखिम भरा है**, क्योंकि **उन्हें लागत को पूरा करने के लिए बड़े ऋण लेने के लिए मजबूर होना पड़ेगा, लेकिन संभावित फसल विफलताओं से निपटने की उनकी क्षमता बहुत कम** है।
- **ऐसे में रागी, बाजरा और ज्वार जैसे मिलेट (पोषक अनाज) सुपरफूड हो सकते हैं जो भूख और जलवायु परिवर्तन से लड़ने में मदद करते हैं।**

- बीज प्रतिस्थापन के लिए **प्रधानमंत्री के पैकेज के तहत ज्वार, बाजरा, दालें और चारे जैसी पारंपरिक फसलों को पुनर्जीवित और बढ़ावा दिया जाना चाहिए।**
- **जैविक खेती और फसल-पशुधन एकीकरण को पारिस्थितिक और आर्थिक दोनों आधारों पर बढ़ावा दिया जाना चाहिए।**
- **लेकिन इतना पर्याप्त नहीं है।** ऐसे **शुष्क क्षेत्रों में किसानों की एक प्रमुख आवश्यकता न्यूनतम समर्थन मूल्य के साथ-साथ एक कुशल किसान-केंद्रित विपणन प्रणाली भी है।**
- **पोषक तत्वों से भरपूर स्थानीय फसलें, अनाज और दालें दोनों को सार्वजनिक वितरण प्रणाली में शामिल किया जाना चाहिए।**

सदाबहार क्रांति: संवहनीय दृष्टिकोणों का मिश्रण

- लगभग 15 साल पहले, **मैंने एक सदाबहार क्रांति के लिए प्रौद्योगिकी और सार्वजनिक नीति विकसित** करने की आवश्यकता पर बल दिया था, **जो संबंधित पारिस्थितिक नुकसान के बिना फसलों की उत्पादकता में निरंतर सुधार लाने के लिए बनाई गई** थी।
- **सदाबहार क्रांति टिकाऊ कृषि के विभिन्न दृष्टिकोणों जैसे कि जैविक खेती, हरित कृषि, पर्यावरण-कृषि और प्रभावी सूक्ष्मजीवों पर आधारित कृषि के उचित मिश्रण पर आधारित** है।

- जबकि **जैविक खेती में खनिज उर्वरकों, रासायनिक कीटनाशकों और आनुवंशिक रूप से संशोधित फसलों का उपयोग शामिल नहीं है, चीन में व्यापक रूप से प्रचलित हरित कृषि, एकीकृत प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण और वृद्धि के साथ-साथ एकीकृत कीट और पोषक तत्व प्रबंधन के सिद्धांत** पर आधारित है।
- हमें वर्षा आधारित और सिंचित दोनों क्षेत्रों में **विभिन्न कृषि-पारिस्थितिकी और सामाजिक वातावरण के अनुकूल टिकाऊ कृषि पद्धतियों की विविधता को बढ़ावा देने की आवश्यकता है।** हमें यह सुनिश्चित करने के लिए **"इ-इकोलॉजी" दृष्टिकोण अपनाना चाहिए कि पारिस्थितिक रूप से टिकाऊ कृषि प्रौद्योगिकियां उपलब्ध** हों।
- उदाहरण के लिए, **अनिवार्य वर्षा जल संचयन और तीन साल के चक्र को अपनाने से संबंधित "इ-इकोलॉजी" दृष्टिकोण** जिसमें खरीफ और रबी दोनों मौसमों के दौरान फलीदार या दलहन उगाई जाती हैं, **कृषक परिवारों और देश दोनों के लिए एक जीत की स्थिति को बढ़ावा देने में मदद करेगी।**

पोषण सुरक्षा:

- **खाद्य सुरक्षा (भुखमरी से सुरक्षा) के तीन प्रमुख आयाम हैं -**

  1. **अपर्याप्त क्रय शक्ति के कारण होने वाली दीर्घकालीन भुखमरी की समस्या;**

2. आहार में **विटामिन ए, आयरन, आयोडीन और जिंक जैसे सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी के कारण छिपी हुई भुखमरी की समस्या**; और
3. **सूखे, बाढ़, चक्रवात और जलवायु परिवर्तन की अन्य अभिव्यक्तियों** के कारण होने वाली **क्षणिक भुखमरी की समस्या**।

- **भूख कम करने की किसी भी रणनीति** को **सभी तीन आयामों** पर ध्यान देना चाहिए। साथ ही, **मुख्य बल खाद्य सुरक्षा से हटकर व्यक्ति की 'पोषण सुरक्षा' पर दिया जाना** चाहिए।
- उल्लेखनीय है कि **'पोषण सुरक्षा' को संतुलित आहार, सुरक्षित पेयजल, पर्यावरणीय स्वच्छता, प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल और प्राथमिक शिक्षा तक शारीरिक, आर्थिक, पर्यावरणीय और सामाजिक पहुंच के रूप में परिभाषित किया गया** है। इसका तात्पर्य **पोषण सुरक्षा के खाद्य और गैर-खाद्य दोनों घटकों पर एकीकृत ध्यान देने की आवश्यकता** से है।
- हमारे **देश की प्रत्येक पंचायत को अपनी सामाजिक-आर्थिक, सामाजिक-सांस्कृतिक और कृषि-पारिस्थितिकी स्थितियों से संबंधित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए अपनी स्वयं की योजना विकसित करनी** चाहिए।

- **कुपोषण के बोझ से उबरने का सबसे प्रभावी तरीका कृषि को पोषण और स्वास्थ्य के साथ जोड़ना है।**
- किसानों को पोषण के आयाम को जोड़कर **अपनी पारंपरिक कृषि प्रणालियों के पुनर्गठन में प्रशिक्षित किया जा सकता है।**
- **यह दो चरणों में किया जा सकता है:**
  - ➢ **सबसे पहले**, किसानों को **ऐसे पौधों से परिचित कराने के लिए बायोफोर्टिफाइड पौधों का एक आनुवंशिक उद्यान स्थापित किया जा सकता** है।
  - ➢ दूसरा, **समुदाय के सदस्यों को 'सामुदायिक भूख सेनानी' के रूप में प्रशिक्षित किया जाना चाहिए**, जो **क्षेत्र की कुपोषण समस्याओं के साथ-साथ उन्हें दूर करने के तरीकों से अच्छी तरह परिचित** हों।

निष्कर्ष:

- उल्लेखनीय है कि **आज किसान केवल जीवनरक्षक सहायता के लिए रो रहे हैं, न कि उन योजनाओं के लिए जो कुछ वर्षों बाद फलीभूत हो सकती हैं।**
- भारत का **भविष्य एक मजबूत, जीवंत और समृद्ध कृषि प्रधान राष्ट्र बनने में निहित है।**

- इसे **'समुचित प्रौद्योगिकी (Appropriate Technology)' और सार्वजनिक नीतियों के बीच तालमेल के माध्यम से हासिल किया जा सकता** है। दुर्भाग्य से, आज दोनों को लेकर चुनौतियां हैं।

'समुचित प्रौद्योगिकी' (Appropriate Technology):

- समुचित या उपयुक्त प्रौद्योगिकी, तकनीकी विकल्प और अनुप्रयोग को शामिल करने वाला एक आंदोलन है **जो छोटे पैमाने पर हो, विकेंद्रीकृत हो, श्रम-केंद्रित हो, ऊर्जा-कुशल हो, पर्यावरण की दृष्टि से टिकाऊ हो, सस्ती हो और स्थानीय लोगों द्वारा तैयार हो एवं उपयोग में लाया जा सके।**
- इसे मूल रूप से **अर्थशास्त्री "फ्रिट्ज़" शूमाकर ने अपनी पुस्तक 'स्मॉल इज़ ब्यूटीफुल' में 'मध्यवर्ती प्रौद्योगिकी' के रूप में व्यक्त किया** था।
- उपयुक्त प्रौद्योगिकी की **सबसे अधिक चर्चा आर्थिक विकास के संबंध में और औद्योगिक देशों से विकासशील देशों में अधिक पूंजी-गहन प्रौद्योगिकी के प्रौद्योगिकी हस्तांतरण के विकल्प के रूप में की जाती** है।

By: Pro. M.S. Swaminathan

साभार: The Hindu

सड़क एवं परिवहन मंत्रालय की राजमार्गों के निर्माण कार्यों एवं परिवहन क्षेत्र को पर्यावरण अनुकूल बनाने की योजना:

क्यों चर्चा में है?

- सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने 28 सितंबर को कहा कि **भारत सरकार राजमार्गों के निर्माण के लिए शहरी ठोस कचरे का उपयोग करने की नीति पर काम कर रही है, एक ऐसा कदम जो पूरे भारत में 24,700 एकड़ प्रमुख भूमि क्षेत्र को मुक्त करने में मदद कर सकता** है।

- उल्लेखनीय है कि सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय (MoRTH) ने पहले ही दिल्ली के शहरी विस्तार रोड- II (UER II), दिल्ली मुंबई एक्सप्रेसवे के DND-सोहना स्पर और अहमदाबाद से धोलेरा **एक्सप्रेसवे के निर्माण में शहरी ठोस कचरे का उपयोग किया** है।

शहरी ठोस अपशिष्ट का निपटान:

- **दैनिक आधार पर उत्पन्न होने वाले ठोस कचरे का निपटान भारत भर के शहरी क्षेत्रों में एक बड़ी पर्यावरणीय चुनौती है। प्रौद्योगिकी और दूरदर्शी नेतृत्व के माध्यम से कचरे से धन बनाना संभव है।** उदाहरण के लिए, **दिल्ली में लगभग 220 लाख टन कचरा जमा है, जबकि मुंबई में 260 लाख टन है।**
- इसके लिए लाया गया **तंत्र नगरपालिका एजेंसियों को लैंडफिल साइटों पर ठोस कचरे को अलग करने के लिए निर्देशित करने के लिए हो सकता है।** सड़क मंत्रालय **स्थानीय नगर निकायों के साथ जुड़ेगा और एक व्यवहार्य मॉडल तैयार करेगा, जो ऐसी सुविधाओं की स्थापना के लिए प्रोत्साहन प्रदान करेगा।**
- मंत्रालय हितधारकों को प्रशिक्षित और कौशल प्रदान करने के लिए कार्यशालाएं भी आयोजित करेगा। इसके **अलावा, राजमार्ग से जुड़े अनुबंध में एक खंड को जोड़ा जायेगा जो तटबंध निर्माण में नगरपालिका कचरे के उपयोग को बढ़ावा देगा।**

वैकल्पिक ईंधन का उपयोग:

- सड़क मंत्रालय का एक और **उल्लेखनीय कदम सड़क निर्माण उपकरण और मशीनरी में वैकल्पिक ईंधन के उपयोग को बढ़ावा देना है।**

- वर्तमान में, **सभी निर्माण उपकरण जीवाश्म ईंधन पर चलते हैं, और सालाना लगभग 400 करोड़ लीटर डीजल की खपत करते हैं। ₹1,000 करोड़ की सड़क परियोजना में लगभग ₹100 करोड़ मूल्य के डीजल की खपत होती है।**
- सड़क मंत्रालय **ब्याज सहायता योजनाओं जैसे प्रोत्साहन की पेशकश कर सकता है, जिस पर काम किया जा सकता है ताकि ठेकेदार वैकल्पिक ईंधन पर चलने वाले निर्माण उपकरणों में निवेश कर** सकें।
- देश के **स्वच्छ ऊर्जा परिवर्तन में वैकल्पिक जैव ईंधन के महत्व पर जोर देते हुए सड़क मंत्री ने कहा कि इसका उद्देश्य 2 लाख करोड़ रुपये की इथेनॉल अर्थव्यवस्था बनाना है।**
- **फ्लेक्स फ्यूल इंजन 100 प्रतिशत इथेनॉल पर काम करेंगे और बचत ₹1 लाख करोड़ से अधिक होगी।**
- मंत्री ने कहा कि 2025 तक, **1 प्रतिशत टिकाऊ विमानन ईंधन (एसएएफ) का उपयोग करने का आदेश दिया जाएगा और इसे 5 प्रतिशत मिश्रण तक बढ़ाने की संभावित योजना** होगी।